इस दीवाली लक्ष्मी बस जाएंगी आपके घर

दीपावली की पूजा- सपरिवार करें।

पंचोपचार पूजन विधि ---विश्वासपूर्वक लगातार सोचें कि आप द्वारा अर्पित की जी रही सभी चीजें शुद्ध हैं और देवता उन्हें स्वीकार कर रहे हैं।

1. स्नान समर्पयामि कहकर स्नान करायें इसके लिए प्रतीक स्वरूप पानी के छीटे दें ।
2. वस्त्र समर्पयामि कहकर वस्त्र या प्रतीक स्वरूप मौली के टुकडे अर्पित करें।
3. गंधकम् समर्पयामि कहकर कुमकुम के छीटे दें।
4. अक्षतान् समर्पयामि कहकर चावल के छीटे दें।
5. पुष्प समर्पयामि कहकर फूल अर्पित करें।
6. धूपमाघ्रापयामि कहकर धूप दिखाये।
7. दीपम् दर्शयामि कहकर दीपक दिखाने के लिए दीपक पर चावल छिड़कें।
8. नैवेध्म् समर्पयामि कहकर मिठाई आदि प्रसाद अर्पित करें।
9. आचमनीयम् समर्पयामि कहकर तीन बार जल चढ़ायें।
10. ताम्बूलम् समर्पयामि कहकर पान या प्रतीक स्वरूप सुपारी,लौग इलायची अर्पित करें।
11. दक्षिणाम् समर्पयामि कहकर सुपारी अर्पित करें।

सामग्री- (क्षमतानुसार इनमें से जो भी जुटा सकें ,किन्तु अनिवार्य कुछ भी नहीं)

कुमकुम, मौली, सुपारी, पान, लौग, इलायची, धूप, दीप, चावल, फूल, चीनी, शहद, दही, दूध, घी, नैवेध, खील-खिलौने, फल, कपूर, पानी, नारियल, जौ, माचिस, आसन,गणेश-लक्ष्मी की मूर्ति, नए कपडे., लक्ष्मी जी के लिए श्रंगार सामग्री।

अनिवार्य सामग्री- आपका विश्वास।

पूजन प्रारम्भ--------

सपरिवार इत्र लगाकर सुख देने वाले आसन पर बैठे।एक पाटे पर कपडा बिछाकर लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति स्थापित करे।सामने जौ की ढेरी लगा दें। उस पर साफ पानी भर कर पास में कलश स्थापित करें। कलश पर नारियल रखें। कुमकुम से स्वास्तिक बना दें। वस्त्र के रूप मे मौली लपेट दे।एक थाल मे पूजन सामग्री रखें। इसमें खील-खिलौने, मिठाई,फल,पान सुपारी,आदि हो। दूसरे थाल में रोली, मौली, अक्षत, पानी से भरा पात्र, चांदी के कुछ सिक्के रखें।एक पात्र मे थोडा सा पंचामृत (कच्चा दूध,दही,चीनी,शहद,घी मिलाकर) बना लें। पाटे के दोनो ओर गन्ने के दो टुकडे बंदनवार के प्रतीक में रखे, इससे परिवार में प्रेम बढ़ेगा।

पूजन का क्रम-

1.वरुण का पूजन। 2. गणेश का पूजन। 3. षोडश मातृका का पूजन। 4. नवग्रहों का पूजन। 5. लक्ष्मी जी का पूजन।

षोडश मातृका व नवग्रहों को कुमकुम से बना लें। एक थाल में कुमकुम से स्वास्तिक बनायें। इस पर गणेश जी का आवाहन करेंगे। उसके नीचे थाल में कुमकुम से त्रिशूल बनायें, इसी पर षोडश मातृका की पूजा करेंगे। इसी थाल में त्रिशूल के नीचे कुमकुम से तीन बिंदियां ऊपर, तीन उसके नीचे, फिर तीन उसके नीचे इस तरह से नौ बिंदियां बनायें। इस पर नवग्रहों की पूजा करेंगे।

श्री गणेशाय नमः -ऊपर की तैयारी के बाद घी का दीपक जला दें। दीपक को प्रणाम करें। अक्षत फूल से इसका पूजन करें। फिर इस दीपक से घी के पांच दीपक और जलायें। उनकी अक्षत, फूल से पूजा करें। इसके बाद ब्रह्मांडीय उर्जा का आवाहन करें-

1. प्राण उर्जा से प्रार्थना करें- हे दिव्य दैवीय उर्जा मेरे तन-मन में व्याप्त होकर मुझे पवित्र करें।मुझे मेरे गुरुदेव के चरणों से जोड दें। मेरे आभामंडल को मां लक्ष्मी के आभामंडल से जोड दें। मुझे लक्ष्मी कृपा प्राप्ति हेतु तन-मन से सक्षम बनायें। यहां रखी पूजन सामग्री पर दैवीय उर्जा की बरसात करके इन्हें शुद्ध व पवित्र करें।
2. शिव गुरु को प्रणाम करके उन्हें साक्षी बनाये कहें- हे गुरु देव भगवान शिव जगत जननी माता महेश्वरी व भगवान गणेश जी सहित समस्त शिव परिवार के साथ मेरे मन मंदिर मे विराजमान हों। मै आपको साक्षी बनाकर दीपावली के शुभ अवसर पर लक्ष्मी साधना कर रहा हूं। मेरी पूजा फलित हो। लक्ष्मी मां का वास मेरे घर मे सदैव के लिए हो जाये इस हेतु अपनी दिव्य कृपा, दैवीय सुरक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करें। धन्यवाद।
3. मां लक्ष्मी को प्रणाम करके उनसे प्रार्थना करें- हे मां लक्ष्मी जगत्पति विष्णु के साथ मेरे मन मंदिर मे विराजमान होकर मेरी साधना -आराधना को स्वीकार करें और साकार करें। मेरे घर मे सदैव वास करें। धन्यवाद।

मुख्य पूजन प्रारम्भ---

सभी लोग थाली में रखे जल पात्र से बांये हाथ में पानी लें दाहिने हाथ से अपने ऊपर जल के छीटे देते हुए बोले-

वरुण विष्णु सबसे बडे देवन में सिरताज।
बाहर भीतर देह मम् शुद्ध करो महराज ।।

इसके बाद सभी लोग दाहिने हाथ में थोडे चावल व जल लेकर संकल्प ले फिर चावल व जल जमीन पर छोड दे।

संकल्प में बोले- ----------------जाति-----------------गोत्र--------------में उत्पन्न मै -------------------जम्बू द्वीप के भरत खण्ड का रहने वाला आज तिथि कार्तिक कृष्णा शुभ संवत् के ------------वार को सकुटुम्ब लक्ष्मी कृपा पूर्वक सुख सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी पूजा कर रहा हूं।(खली जगहों पर क्रमशः अपनी जाति गोत्र नाम व दिन बोलें)।

अब परिवार की सुरक्षा के लिए कहें-

पूरब में घनश्यामजी दक्षिण में वाराह ।
पश्चिम केशव दुख हरें उत्तर श्रीधरशाह ।।
ऊपर गिरिधर कृष्णजी शेषनाग पाताल।
दशों दिशा रक्षा करें मेरी नित गोपाल ।।

1-**वरुण का पूजन** - कलश पर अक्षत छिडक़कर आवाहन करें-

जल जीवन हैं जगत का वरुणदेव के पास।
सकल देव निश दिन करें कलश माहि निवास।।
गंगादिक नदियां बसें सागर सप्त निवास।
पूजा हेतु पधारिए पाप शाप हों नाश।।

कलश पर पंचोपचार पूजा के बाद प्रार्थना-

क्या दे सकता दक्षिणा आती मुझको लाज।
नमस्कार की भेंट लो मै जोड़ दोनों हाथ ।।

2- **गणेश पूजन-** पूजा के लिए थाल में बनाये स्वास्तिक पर चावल छिड़ककर गणेशजी का आवाहन करें- बोलें-

रिम-झिम करता आवजो गौरी पुत्र गणेश।
सबसे पहले मनावऊं काटो सकल कलेश।।
सिद्धि सदन गजवदन प्रथम पूज्य गणराज।
प्रथम वंदना आपको आय सुधारो काज।।

इसके बाद गणेशजी की मूर्ति पर पूजन करे-- पंचोपचार पूजा के बाद प्रार्थना करें -बोले-

जय गणपति गिरिजा सुवन रिद्धि-सिद्धि दातार।
कष्ट हरो मंगल करो नमस्कार शत बार।।

3- **षोडश मातृका पूजन-** पूजा के थाल में बने त्रिशूल पर चावल छिड़क कर षोडश़ मातृका का आवाहन करे- बोलें-

बेगि पधारें गेह मम सोलह माता आप।
वंश बढे पीडा़ कटे मिटे शोक संताप।।

त्रिशूल पर पंचोपचार पूजा के बाद प्रार्थना करें -बोले-

सोलह माता आपको नमस्कार शत बार।
पुष्टि तुष्टि मंगल करें भरें अखंड भंडार।।

4- **नवग्रह पूजन-** पूजा के थाल में बनी नवग्रह की बिंदियों पर चावल छिड़ककर आवाहन क़रें-

रवि शशि मंगल बुध गुरू शुक्र शनि महराज।
राहू केतु नवग्रह नमो सकल सवारें काज।।

नवग्रहों की पंचोपचार पूजा के बाद प्रार्थना करें -बोले-

हे नवग्रह आपसे करूं विनती बारम्बार।
मै सेवक आपका रखें कृपा अपार।।

5- **महालक्ष्मी पूजा-** लक्ष्मी जी की मूर्ति पर अक्षत छिड़ककर आवाहन करें- बोलें-

जय जग जननी जय रमा विष्णुप्रिया जगदम्ब।
बेग पधारो गेह मम करो न मातु विलम्ब।।
पाट विराजो मुदित मन भरो अखंड भंडार ।
भक्ति सहित पूजन करूं करो मात स्वीकार।।
विष्णुप्रिया सागरसुता जनजीवन आधार ।
गेह वास मेरे करो नमस्कार शत बार।।

यदि धातु की मूर्ति से पूजन कर रहे है तो स्नान सीधे मूर्ति को करायें अन्यथा प्रतीक स्नान के लिए पास में कोई पात्र रखकर उसमें स्नान सामग्री डालते जायें।

1- स्नानम् समर्पयामि कहकर जल के छीटे दें।
2- दुग्धस्नानम् समर्पयामि कहकर दूध के छीटे दें।
3- शर्करास्नानम् समर्पयामि कहकर चीनी के छीटे दें।
4- पंचामृतस्नानम् समर्पयामि कहकर पंचामृत के छीटे दें।
5- शुद्धजल स्नानम् समर्पयामि कहकर जल के छीटे दें।
6- वस्त्र समर्पयामि कहकर मौली का लक्षा या घर की प्रधान महिला नई साडी़ अर्पित करे। साथ ही चूडिय़ा, बिंदी, काजल व अन्य श्रंगार सामग्री अर्पित करें। कामना करें सभी तरह के श्रंगार से युक्त लक्ष्मी घर में हमेशा के लिए पधारी है।
7- गंधकम् समर्पयामि कहकर कुमकुम के छीटे दें।
8- अक्षतान् समर्पयामि कहकर चावल के छीटे दें।
9- पुष्प समर्पयामि कहकर फूल अर्पित करें।
10- धूपमाघ्रापयामि कहकर धूप दिखाये।
11- दीपम् दर्शयामि कहकर दीपक दिखाने के लिए दीपक पर चावल छिड़कें।
12- नैवेधम् समर्पयामि कहकर खील,खिलौने, मिठाई आदि प्रसाद अर्पित करें।
13- आचमनीयम् समर्पयामि कहकर तीन बार जल चढा़यें।
14- रितुफलम् समर्पयामि कहकर फल अर्पित करें।
15- ताम्बूलम् समर्पयामि कहकर पान अर्पित करें।
16- दक्षिणाम् समर्पयामि कहकर सुपारी अर्पित करें।

इसके बाद सभी लोग हाथ जोडक़र सोचें की हजार बार देवी मां को प्रणाम कर रहे है-बोलें-

जयति जयति मातेश्वरी सहस्त्र वन्दना तोय।
सुख सम्पत्ति वरदान दो दास जानकर मोय।।

इसके बाद सरसों के तेल के दीपक पहले जलाये घी के दीपक से जलायें। सरसों के तेल का चौमुखी दीपक भी जला दें।उसकी चारो बाती जलाकर अक्षत,फूल छिड़ककर परिवार की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें। कुछ देर बाद तीन बातियों को एक सिक्के से बुझा दे। एक को जलने दे। तेल के दूसरे दिए घर के विभिन्न जगहों मे रखें। मोमबत्ती आदि जलाकर रोशनी करे। पटाखे छुडा़ने से परहेज करे। बहुत जरूरी हो तो सम्भंल कर छुडा़यें। देर तक जगे। जो लोग चाहते है कि लक्ष्मी उनके घर में हमेशा के लिए बस जायें वे इस रात गुस्सा बिल्कुल न करे। लक्ष्मी सिद्धी के लिए **जय मां लक्ष्मी** या **ॐ ह्रीं नमः** मंत्र का मानसिक जाप रात में सोने तक लगातार करते रहे।

इस पूजा को ध्यान के रूप में मानसिक तौर पर भी कर सकते है। ऐसा करने वालों का हर दिन दिवाली हो जाता है।

आप सभी को मेरी तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें-

-रुद्रानन्द राकेश।